शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

धर्मेन्द्र कुमार
शोध-छात्र,
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी,
अमृतसर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

# मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

- धर्मेन्द्र कुमार

***भारतीय धर्म साधना में सूफियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय निर्गुण परंपरा से इनका वैचारिक और अध्यात्मिक साम्य देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध आलेख सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी के 'अखरावट' में व्यक्त 'रहस्यवादी' आध्यात्मिक भावनाओं के स्वरूप को उद्घाटित करता है।***

***विषय संकेतः-*** *अखरावट, रहस्यवाद, मलिक मुहम्मद जायसी, सूफी साहित्य, अवधी साहित्य*

सूफी संत जायसी हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। इन्होंने प्रेम-मार्गी शाखा का अनुसरण किया है। इनका नाम मुहम्मद था, नाम के आगे प्रयुक्त शब्द 'मलिक' उपाधि मूलक है, जो इन्हें वंशजों से प्राप्त हुआ है।[1] 'जायस' नगर में रहने के कारण जायसी शब्द भी इनके नाम के साथ जुड़ गया। इस प्रकार इनका नाम 'मलिक मुहम्मद जायसी' पड़ गया। जायस नगर का उल्लेख इन्होंने स्वयं अपनी काव्य कृतियों में किया है।[2]

जायसी के पिता का नाम शेख मुमरेज़ था और शेख अलहदाद इनके नाना थे। इनका ननिहाल मानिकपुर में था। यह माना जाता है कि जायसी पर शीतला का असाधारण प्रकोप हुआ, जीवन की आशा जाती रही। माता का हृदय व्याकुल हो गया और सच्चे हृदय से शाहमदार की प्रार्थना की। माता की प्रार्थना स्वीकार हुई, बच्चा बच गया परन्तु एक आंख जाती रही और उसी ओर के कान से भी बहरे हो गए। थोड़े समय बाद इनकी माता का देहावसान हो गया। पिता का देहान्त पहले ही हो चुका था। इस प्रकार जायसी बाल्यावस्था में ही अनाथ हो गए।[3]

जायसी की कृतियाँ हिन्दी साहित्य को इनकी महान देन हैं। हिन्दी के सूफी कवियों में सबसे अधिक रचनाएँ इन्हीं की मिलती हैं। जायसी के साहित्यिक महत्त्व को इस बात से भी समझा जा सकता है कि इन्होंने पद्मावत, अखरावट और आखिरी कलाम में जिस शैली तथा ढंग को अपनाया है, उसी का अनुसरण करके तुलसीदास ने रामचरित मानस जैसे महाकाव्य की रचना की है। जायसी ने उपरोक्त रचनाओं में छन्दों को एक विशेष क्रम में रखा है- पहले दोहा फिर सोरठा तथा बाद में चौपाइयाँ। परन्तु कहीं-कहीं चौपाइयों के बाद दोहा या सोरठा आया है, जैसे- 'आखिरी कलाम' में। दोहे या सोरठे में जो प्रसंग आया है उसकी व्याख्या चौपाइयों में की गई है। पर तुलसी ने कहीं-कहीं पर दोहा और सोरठा लिखकर बाद में चौपाइयाँ लिखी हैं और कहीं-कहीं केवल दोहा या सोरठा देकर चौपाइयाँ लिखी हैं।

जायसी की प्रमुख रचनाएँ-जायसी की रचनाओं तथा उनकी संख्याओं के विषय पर विद्वानों में मतभेद है। नागरी प्रचारिणी सभा, बंगाल एशियाटिक सोसायटी तथा सम्मानित संस्थाओं एवं विद्वानों द्वारा जायसी कृत ग्रन्थों की संख्या लगभग निश्चित की गई है- 1 पद्मावत 2 अखरावट 3 सखरावत 4 चम्पावत 5 इतरावत 6 मटकावत 7 चित्रवत 8 सुर्वानामा 9 मोराई नामा 10 मुकहरानामा 11 पोस्तीनामा 12 मुखरानामा 13 गुहरानामा (होली-नामा) 14 आखिरी कलाम।[4] कुछ विद्वानों ने रचनाओं की संख्या 24 तक मानी है।[5] नवीनतम शोधों के अनुसार जायसी की प्रकाशित रचनाएँ 7 मानी गई हैं- पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कहरानामा, मसलानामा, चित्ररेखा, कन्हावत।[6]

**अखरावट**- यह जायसी की सिद्धान्त प्रमुख रचना है। अभी तक मुख्यतः अखरावट की दो प्रकाशित प्रतियाँ हिन्दी जगत के सम्मुख उपस्थित हो सकी हैं। प्रथम प्रति सम्वत् 1981 वि0 में रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित जायसी ग्रन्थावली के अंतर्गत आती है। द्वितीय प्रति सम्वत् 2008 वि0 में माता प्रसाद गुप्त द्वारा

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

धर्मेन्द्र कुमार
शोध-छात्र,
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी,
अमृतसर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

सम्पादित व प्रकाशित जायसी ग्रन्थावली में निहित है। इन दोनों प्रतियों के अनुसार अखरावट में कुल 54 दोहे, 54 सोरठे और 371 अर्द्धालियाँ (चौपाइयाँ) हैं। आरम्भ में एक दोहा फिर एक सोरठा आया है। इसके उपरान्त[7] अर्द्धालियाँ एक दोहा व एक सोरठा आया है और इस क्रम का निर्वहन अंत तक किया गया है। रचना का आरम्भ दोहा छन्द से व सम्पूर्णता सोरठा छन्द से हुई है। देवनागरी वर्णमाला के अक्षरों के क्रम के अनुसार ही प्रत्येक अक्षर से इस रचना की चौपाइयों का आरम्भ होता है और इसी कारण इस रचना का नाम अखरावट पड़ा है। ''नाम की पुष्टि के रूप में रचना के अन्दर एक दोहा भी दिया गया है।''[8]

**रचनाकाल**- अखरावट में उसके रचना-काल की जानकारी नहीं दी गई है, परन्तु उसमें अंकित चौपाई- ''कहा मुहमद प्रेम कहानी। सुनि सो ज्ञानी भए धियानी।।'' का अर्थ विद्वानों ने यह निकाला है कि वह प्रेम कहानी जिसे सुनकर ज्ञानी लोग भी परम प्रिय के ध्यान में मग्न हो जाते हैं, निश्चय ही पद्मावत है। इस प्रकार अखरावट की रचना पद्मावत से बाद की प्रतीत होती है।[9] पर यह बात तर्क संगत नहीं क्योंकि ''कहा मुहमद प्रेम कहानी'' का अर्थ इसी रचना की अन्य पंक्तियों में मिल जाता है। यह प्रेम कहानी यहीं पर दी गई है।[10]

अत: स्पष्ट है कि ''कहा मुहमद प्रेम कहानी'' का सम्बन्ध सोघ्हं वाली कहानी से है, जो जीव और ब्रह्म के प्रेम विरह की कहानी है। मनेर शरीफ़ से प्राप्त अखरावट की प्रति की पुष्पिका में 'जुम्मा 8 जुल्काद, 911 हिजरी' का उल्लेख है। विद्वानों का विचार है कि यह तिथि मूल प्रति में दी हुई होगी और उतारा करते समय लिपिकार ने उसे ज्यों का त्यों उतार दिया है। इससे अखरावट का रचना-काल 911 हिजरी प्रमाणित होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अखरावट की रचना पद्मावत से पहले हुई क्योंकि आंतरिक साक्ष्यों से पद्मावत की रचना का आरम्भ 927 हिजरी सिद्ध होता है।[11]

**रहस्यवाद**- रहस्यवाद दिव्यता से परिपूर्ण पराभौतिक अनुभव है, जो ज्ञानेन्द्रियों तथा बुद्धि की सीमा से परे है। यह विस्माद और अलौकिक आनन्द की अवस्था है, जिसे प्राप्त करने के पश्चात् सांसारिक आनन्द की आवश्यकता नहीं रह जाती। रहस्यवाद की अवस्था कथन से परे, गूंगे द्वारा मिठाई खाने के समान है।[12] रहस्यवाद का परमलक्ष्य व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन का विकास करना है। यह प्रकृति में फैली अनेकता में से एकता की खोज के साथ सम्बन्ध रखता है। रहस्यवाद मात्र विश्वास पर आधारित नहीं बल्कि अनुभव की हुई हकीकत है। सांसारिक निर्लेपता, मैं से उदासीनता, अलौकिक शक्ति के प्रति प्रेम, जिज्ञासा, अटूट श्रद्धा, प्रियतम से मिलाप की प्रबल इच्छा तथा समर्पण आदि रहस्यवाद के मूलतत्व हैं।

**अखरावट में रहस्यवाद**- मलिक मुहम्मद जायसी ने अखरावट की शुरुआत ही रहस्यवाद से की है। सर्वप्रथम सृष्टि-रचना तथा उससे पहले की स्थिति को प्रकट किया गया है- ''न आकाश था, न धरती, न चन्द्र और न सूर्य। सब कुछ अन्धकारमय था, सुन्न-म-सुन्न था। पाप, पुन्य, स्वर, शब्द, नावं, ठावं कुछ नहीं था। परमात्मा ही स्वयं था। इस अन्धकार में परमात्मा ने सर्वप्रथम अपना नूर (प्रकाश) उत्पन्न किया।''[13] जायसी के अनुसार परमात्मा आदि का भी आदि है। इस दुनिया का खेल परमात्मा ने ही रचाया है, पर जिस प्रकार वह इस खेल को रचाकर चला रहा है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। वह आप ही अकेला चौदहों भवनों में परिपूर्ण है।[14] अन्य मुसलमानों की भाँति जायसी भी हज़रत मुहम्मद साहिब में दृढ़ आस्था रखते थे। अत: उनके अनुसार ''परमात्मा ने एक पुरुष का निर्माण किया। पूर्णिमा की कला के सदृश्य उस तेजस्वी पुरुष का नाम मुहम्मद रखा। विधाता ने पहले उसकी ज्योति रची और फिर उसी के प्रेम से सृष्टि की रचना की।''[15] मुहम्मद की प्रीति रूपी बीज के अंकुरित होने पर श्वेत और श्याम दो वृक्ष उत्पन्न हुए। प्रत्येक वृक्ष में दो पत्ते उत्पन्न हुए धरती और आकाश, चाँद और सूरज। दिन और रात बने, द्वन्द्व उत्पन्न हुआ। इस तरह पाप-पुण्य, दु:ख-सुख, आनन्द-संताप, बुरा-भला, नर्क-स्वर्ग, सत्य और झूठ आदि एक दूसरे के संघाती उत्पन्न हो गए। जिस प्रकार कलम का पेट चीरकर जब दो फालें की जाती हैं तब वह चलती है, उसी प्रकार आरम्भ में द्वन्द्व उत्पन्न होने पर सृष्टि का क्रम आगे चला।[16] जायसी का यह विश्वास है कि परमात्मा ने जब सृष्टि के निर्माण की सारी प्रक्रिया पूरी कर ली और मनुष्य को उत्पन्न करना चाहा तब उसने पहले चार फ़रिश्तों (देवदूतों) को उत्पन्न किया और उनको आदेश दिया कि चार तत्व अर्थात् अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी का संयोग कराएँ। इन्हीं चार

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

धर्मेन्द्र कुमार
शोध-छात्र,
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी,
अमृतसर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

तत्वों से शरीर का निर्माण कर, उसमें पंचभूतात्मक इन्द्रियों को स्थापित कर दिया। इस शरीर रूपी महल में नौ द्वार प्रकट रूप में रखे तथा दसवें द्वार को मूंद कर गुप्त कर दिया।[17] इस प्रकार वह सृष्टि का बीज, जो पहले शून्य रूप में था, अठारह हजार योनियों के रूप में प्रकट हुआ। जगत के प्रत्येक घट अर्थात् शरीर में परमात्मा का अंश समाया हुआ है और वह स्वयं ही अनेक रूप व अनेक रंग बनकर खेल रहा है।[18] उपरोक्त चारों फ़रिश्तों के क्रमशः नाम हैं- ''ज़िबराईल, मैकाईल, इस्राफ़ील और इज़राईल।''[19]

सृष्टि रचना के रहस्य के बाद अखरावट में हमें 'ब्रह्म और जीव, आत्मा व परमात्मा' की एकता की रहस्यवादी झलक के दर्शन होते हैं। अद्वैतवाद के 'अहंब्रह्मस्मि' तथा सफ़ीवाद के 'अनलहक' की भांति जायसी ने भी ''जो बरह्मण्ड सो पिण्ड है'' का वर्णन अपनी रचना में किया है। पाश्चात्य धर्म ग्रन्थ 'बाइबिल' के अनुसार ''तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।''[20] इस प्रकार यह संसार परमात्मा का प्रकट रूप है। अतः परमात्मा के अनुरूप रचे गए इस पिण्ड में समस्त ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। जिस तरह जगत का कर्ता मुख्यतः दो कलाओं अर्थात् पुरुष और प्रकृति से युक्त है, उसी रूप में आदम का अवतार हुआ। यही दो पक्षों की व्यवस्था शरीर की रचना में भी है। दो हाथ, दो पैर, दो नेत्र, दो कान, दो होठ और दांतों की भी दो पंक्तियाँ ही हैं। मस्तक आकाश तथा धड़ धरती रूप है और इन दोनों पक्षों से मिलकर मानों दूसरा ब्रह्माण्ड बन गया। मांस मिट्टी तथा रक्त जल के समान है, नसें नदियाँ हैं और हृदय गहरे समुद्र की तरह है। रीढ़ सुमेरु पर्वत है और हड्डियाँ उससे जुड़ी हुई पहाड़ियाँ हैं। सिर के बाल धरती पर उगे हुए वृक्ष हैं और शरीर के रोम तृण के समान हैं।[21] सूर्य, चन्द्र, तथा विभिन्न ग्रहों का स्थान भी शरीर के अन्दर ही निर्धारित किया गया है- ''प्रथम भाग में शनि ग्रह का क्षेत्र है, जिसका स्थान पौली अर्थात् पैर के निचले हिस्से में निहित है। द्वितीय भाग में बृहस्पति का क्षेत्र है, जो काम को भोगने वाले घर के द्वार पर स्थित है। तृतीय भाग में मंगल का क्षेत्र समझना चाहिए, जो नाभि-कमल में स्थित है। चतुर्थ भाग सूर्य का क्षेत्र है, जो बाएं स्तन में निहित है। पंचम भाग शुक्र का क्षेत्र है और जीभ के नीचे कंठ में स्थित है। षष्ठम भाग बुद्ध का स्थान है तथा भौंहों के बीच में स्थित है। सप्तम भाग सोम अर्थात् चन्द्रमा कपाल में स्थित है, जिसे दसम द्वार भी कहा जाता है। जो साधक इस भेद को समझ लेता है वही सिद्ध है।''[22] सातों द्वीपों और नौ खण्डों आदि को भी जायसी ने मानव शरीर में स्थित माना है और कहा है कि यदि मनुष्य ब्रह्माण्ड की कोई भी वस्तु प्राप्त करना चाहता है तो वह उसे अपने शरीर के अन्दर ही खोजनी चाहिए अन्यत्र खोजने की आवश्यकता नहीं है।[23] उपरोक्त सात द्वीप ये हैं- ''जम्बू द्वीप, प्रक्ष द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच द्वीप, शक द्वीप, शाल्मली द्वीप और पुष्कर द्वीप।''[24] उपर्लिखित नौ खण्ड इस प्रकार हैं- ''पृथ्वी के नौ विभाग 'भरत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश' आदि।''[25]

नाक मानो पुले सिरात (मुसलमानों की वैतरणी का पुल जो पापियों के लिए बाल के समान बारीक और धर्मियों के लिए खास चौड़ी सड़क) का मार्ग चला गया है और भौंहें मानो उस पुल के दो पार्श्व हैं (दाहिने पार्श्व से पुण्यात्मा व बाएँ पार्श्व से पापी जाते हैं। दोनों स्वर (श्वांस का प्रवाह जो कभी बाएँ नथुने से चलता है और कभी दाएं नथुने से, बाएं स्वर को चन्द्र स्वर या इड़ा नाड़ी तथा दाएं स्वर को सूर्य स्वर या पिंगला नाड़ी कहते हैं) चांद और सूरज हैं, उज्वल ललाट झिलमिलाते तारों के समान है। जाग्रतावस्था दिन व सुप्तावस्था रात है, हर्ष की स्थिति प्रभात तथा संदेह की स्थिति सायंकाल की तरह है। सुख पूर्वक जीवन भोगना बैकुंठ है और रोग आदि से उत्पन्न दुःख नर्क है। रुदन वर्षा है तथा क्रोध बादलों का भयंकर गर्जन है। हंसी बिजली की चमक की तरह और कृपा या दया बर्फ पड़ने जैसी शीतल है। प्रत्येक सांस अलग-अलग घड़ी व पहर है। इस प्रकार मनुष्य के शरीर में ही छः ऋतुएँ और बारह महीने व्यतीत हो रहे हैं।[26] इस्लाम धर्म के प्रमुख तीर्थ-स्थल आदि को भी मलिक मुहम्मद जायसी ने शरीर के अन्दर ही उपस्थित माना है, जिसमें माथे को मक्का कहा गया है, जो शरीर में सबसे ऊपर स्थित होता है और हृदय मदीना है जहाँ नबी अर्थात् पैगम्बर का नाम सदैव रहता है। श्रवण, आँख, नाक और मुख आदि चार सेवक अथवा चार फ़रिश्ते अथवा चार ख़लीफ़े हैं।[27]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

धर्मेन्द्र कुमार
शोध-छात्र,
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी,
अमृतसर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

जायसी के जीवन की एक रहस्यवादी घटना है जिसका उल्लेख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी ग्रन्थावली में किया है– ''जायसी एक गृहस्थ किसान के रूप में जायस में रहते थे। उनका नियम था कि वे खाना अकेले कभी न खाते, जो आस-पास दिखाई पड़ता उसके साथ बैठ कर खाते थे। एक दिन इधर-उधर कोई दिखाई न पड़ा। बहुत इन्तजार करने के बाद एक कोढ़ी दिखाई दिया। जायसी ने बड़े आग्रह से उसे अपने साथ खाने को बिठाया और एक ही बरतन में भोजन करने लगे। उसके शरीर से कोढ़ चू रहा था। कुछ मवाद भोजन में भी चू पड़ा। जायसी ने मवाद वाले अंश को खाने के लिए उठाया पर उस कोढ़ी ने हाथ थाम लिया और कहा 'इसे मैं खाऊंगा, आप साफ हिस्सा खाइए' लेकिन जायसी झट से उसे खा गए। इसके बाद वह कोढ़ी अदृश्य हो गया। इस घटना से जायसी की मनोवृत्ति ईश्वर की ओर और भी अधिक हो गई।''[28]

अखरावट में लिखित एक सोरठे को उपरोक्त घटना के साथ जोड़ कर देखा जाता है। इस सोरठे में कहा गया है– ''बूंद में ही सारा समुद्र समाया हुआ है, यह आश्चर्य जनक बात किसके सम्मुख कही जाए? यह संसार रूपी समुद्र परमात्मा का ही व्यक्त रूप है और मनुष्य एक बूंद की तरह है। जो व्यक्ति परमात्मा को खोजता है, वह अपने आप में ही खो जाता है।''[29] जिस प्रकार एक छोटे से बीज के अन्दर बड़े से बड़े वृक्ष का रूप समाया होता है, उसी प्रकार संसार रूपी विशाल वृक्ष, ब्रह्म रूपी बीज के अन्दर अव्यक्त भाव से निहित रहता है और वह ब्रह्म बीज स्वयं ही अपने को उगाता अर्थात् प्रकट करता है तथा संसार के फल का भोक्ता भी आप ही है, शरीर में ही पीड़ा, वेदना और उसकी औषधि है विष व अमृत भी वहीं पर उपस्थित रहता है, यह कितने अचरज की बात है, परन्तु आदि की कसौटी पर कसने से ही यह विष और अमृत का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।[30]

मन तथा चेतना की तीव्र गति और व्यापकता के रहस्यवादी अनुभव का संकेत करते हुए जायसी ने लिखा है– ''पवन से भी तीव्र गति वाला मन है और चेतन-तत्व मन से भी अधिक तीव्र गति रखता है। चेतन-तत्व अत्यन्त व्यापक भी है अर्थात् उसके लिए कोई हदबन्दी या सीमा नहीं है, दीवारें तथा पर्वत आदि उसके मार्ग में अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकते।''[31] इसी प्रकार स्वप्न की अवस्था का विस्मय भरा वर्णन किया गया है– ''निद्रावस्था में कोई व्यक्ति जब स्वप्न देखता है तो उसके अन्दर ही एक नया संसार उत्पन्न हो जाता है। स्वप्न की अवस्था में वह अपने शरीर के ही भीतर इस नए संसार में विचरण करता है जिसमें उसे बाहरी संसार की वस्तुएँ दिखती हैं। स्वप्न में जब वह बोलता है या कोई अन्य क्रिया करता है तो शरीर के अन्दर ही करता है। इससे इस बात का संकेत मिलता है कि आत्म-तत्व के भीतर भी ब्रह्माण्ड है। परन्तु जागने पर मनुष्य यह नहीं जानता कि वह कौन सा ऐसा भण्डार है जहाँ से ये असंख्य वस्तुएँ निकलती चली आती हैं।''[32]

शरीर के अन्दर चेतन-तत्व की व्याप्ति, जीवन की क्रियाओं तथा मृत्यु के बारे में कवि ने लिखा है– ''जीवात्मा बिन्दु के रूप में स्वर्ग से आकर शरीर में अदृश्य रूप से व्याप्त हो जाता है मानो उसे छिपाकर गोपनीय कर दिया गया हो। उसी चेतन-तत्व से मन बनता है और शरीर के साथ मिलकर अनेक क्रीड़ाएँ करता है। चित् या जीव शरीर को देखकर ताने मारता हुआ कहता है कि अब तू मेरे बिना नेत्र कैसे नहीं खोलता अर्थात् चित् के बगैर शरीर निश्चल रहता है। शुद्ध ब्रह्म या आत्मा प्रत्येक सांस में सोऽहं अर्थात् 'मैं वह (ब्रह्म) हूँ' की ध्वनि उत्पन्न करता है। यह शरीर सराय के समान है जिसमें मन रूपी दीपक प्रकाश उत्पन्न करता है, उस दीपक के अन्दर चेतन-तत्व रूपी तेल भरा है और सांस रूपी बाती है, जो ईश्वर की ज्योति द्वारा ज्योतिर्मय हो रही है। ईश्वर की ज्योति ही मोक्ष का मार्ग दिखलाती है। तेल के चूक जाने पर बाती सूख जाती है, दीपक बुझ जाता है और तन रूपी सराय के अन्दर मृत्यु रूपी रात का अंधेरा हो जाता है।''[33] यहाँ पर शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया है कि जब प्राण रूपी पक्षी शरीर रूपी पिंजड़े को छोड़कर चला जाता है तब मृत शरीर कैसे फूलता है? जब हाथ, पाँव, मुँह, सिर व धड़ इत्यादि जो अलग-अलग नाम थे वे न रह गए तब मनुष्य की वास्तविक सत्ता कहाँ है और क्या है, इस पर विचार करना है।[34] उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में कहा गया है– ''एक ही ब्रह्म के दो पक्ष हैं– पुरुष और प्रकृति अथवा पितृपक्ष और मातृपक्ष। माता के रज और पिता के शुक्रबिन्दु से सब मनुष्य उत्पन्न हुए। रज से चारों तत्वों से युक्त स्थूल शरीर तथा बिन्दु से ज्ञानेन्द्रियों सहित जीवात्मा का निर्माण हुआ। मृत्यु होने पर जैसे पृथ्वी, जल, तेज, वायु प्रकृति के ये चारों तत्व पृथ्वी में मिल जाते हैं वैसे ही अपनी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

धर्मेन्द्र कुमार
शोध-छात्र,
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी,
अमृतसर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

ज्ञान वृत्तियों के सहित जीवात्मा स्वर्ग में फिर जा मिलता है। इस प्रकार मनुष्य की वास्तविक सत्ता परमसत्ता में ही विलीन हो जाती है। वायु की उपस्थिति के कारण शरीर फूलता है, पानी के द्वारा भारी होता है और अग्नि शरीर को जलाकर राख कर देती है।''[35]

रहस्यवाद का परमलक्ष्य परमेश्वर से मिलाप करना (अनीश्वरवादी धर्मों में परमानन्द की प्राप्ति) है। जायसी के अनुसार ''प्रियतम से मिलाप का मार्ग अत्यन्त कठिन है। गुरु की कृपा द्वारा यह कार्य सरल हो जाता है। जो व्यक्ति गुरु के बिना इस अगम रास्ते पर चलने का प्रयत्न करते हैं, उन्हें भटकना पड़ता है और दुःख मिलते हैं। परमात्मा से मिलाप के लिए आपा मिटाना पड़ता है, जीवित मरना पड़ता है। जब गुरु की कृपा से द्वैत मिट जाता है तब परमात्मा के साथ साक्षात्कार हो जाता है। परन्तु गुरु की प्राप्ति भी परमेश्वर की कृपा पर निर्भर है क्योंकि वह आप ही गुरु है और आप ही चेला है, आप ही जोगी व आप ही भोगी है। आप ही वैद्य और आप ही रोगी है। प्रियतम से मिलाप की यह प्रेम कहानी अकथ है और गहन चिन्तन के द्वारा ही समझ में आ सकती है।''[36]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मलिक मुहम्मद जायसी ने अखरावट में सृष्टि रचना के पूर्व की अवस्था से लेकर मानव की रचना, जीवन के विभिन्न पहलुओं, ब्रह्माण्ड तथा शरीर की तुलना, ईश्वर के साथ साक्षात्कार तथा मृत्यु आदि का वर्णन रहस्यवादी रूप में किया है।

**संदर्भः-**

1. त्रिगुणायत, गोबिन्द, जायसी का पद्मावत काव्य और दर्शन, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1969, पृष्ठ 11.
2. जायस नगर धरम अस्थानू। तहवां यह कवि कीन्ह बखानू। (पद्मावत, 1/23/1.) जायस नगर मोर अस्थानू। नगर के नावं आदि उदयानू। (आखिरी कलाम, 10/1.)
3. कुलश्रेष्ठ, जयदेव, सूफी महाकवि जायसी, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढं, 1966, पृष्ठ 35-36.
4. मलिक मुहम्मद जायसी का जीवन चरित्र, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, जुलाई 1940, भाग 45, अंक 1, पृष्ठ 57.
5. शर्मा, शिव कुमार, जायसी के काव्य में अप्रस्तुत विधान, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 74.
6. वही, पृष्ठ 76.
7. पाठक, शिव सहाय, मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य, ग्रन्थम प्रकाशन, कानपुर, 1964, पृष्ठ 72-73.
8. कहौं सो ज्ञान ककहरा सब आखर महं लेखि। पंडित पढ़ अखरावटी टूटा जोरेहु देखि।। (अखरावट, 1/ दोहा 2)
9. पाठक, शिव सहाय, मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य, ग्रन्थम प्रकाशन, कानपुर, 1964, पृष्ठ 74.
10. कहा न अहै अकथ भा रहई। बिना विचार समुझि का परई।।सोघ्हं सोघ्हं बसि जो करई। जो बूझै सो धीरज धारई।।कहै प्रेम कै बरनि कहानी। जो बूझै सो सिद्ध गियानी।। (अखरावट, 53/5-6-7)
11. पाठक, शिव सहाय, मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य, ग्रन्थम प्रकाशन, कानपुर, 1964, पृष्ठ 72-73.
12. बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै।। कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै।। (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ 1302)
13. गगन हुता नहिं महिं हुती, हुते चंद नहिं सूर। ऐसइ अंधाकूप महं रचा मुहम्मद नूर।। (अखरावट, 1/ दोहा 1), हुता जो सुन्न-म-सुन्न, नावं ठावं ना सुर सबद। तहां पाप नहिं पुन्न, मुहमद आपुहि आप महं।। (वही, 1/सोरठा 2)
14. आदिहु ते जो आदि गोसाईं। जेइ सब खेल रचा दुनियाई।। जस खेलसि तस जाइ न कहा। चौदह भुवन पूरि सब रहा।। (वही, 1/चौपाई 1-2)
15. कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा। नाम मुहम्मद पूनौ करा।। प्रथम जोति बिधि ताकर साजी। औनहिं प्रीति सिहिटि उपराजी।। (पद्मावत, स्तुति-खण्ड, 11/चौपाई 1-2)
16. तेहि कै प्रीति बीज अस जामा। भए दुइ बिरिछ सेत औ सामा।। होतै बिरवा भए दुइ पाता। पिता सरग औ धरती माता।। सूरुज चांद दिवस औ राती। एकहि दूसर भएउ संघाती।। चलि सो लिखनी भइ दुइ फारा। बिरिछ एक उपनी दुइ डारा।। (अखरावट, 3/चौपाई, 2-5)
17. जबहीं जगत किएउ सब साजा। आदि चहेउ आदम उपराजा।। पहिलेइ रचे चारि अढ़वायक। भए सब अढ़वैयन के नायक।। भइ आयसु चारिहु के नाऊं। चारि वस्तु मेरवहु एक ठाऊं।। तिन्ह चारिहु कै मंदिर संवारा। पांच भूत तेहि महं पैसारा।। नव द्वारा राखे मंझियारा। दसवं मूंदि कै दिएउ केवारा।। (वही, 5/चौपाई 2-7)
18. रहा जो एक जल गुपुत समुंदा। बरसा सहस अठारह बुंदा।। सोई अंस घटै घट मेला। ओ सोइ बरन बरन होइ खेला।। (वही, 4/चौपाई 2-3)

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'

धर्मेन्द्र कुमार
शोध-छात्र,
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी,
अमृतसर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

19. इन्दिरा कुमारी सिंह, जायसी की विशिष्ट शब्दावली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अनिल प्रकाशन, पटना, 1983, पृष्ठ 27.
20. धर्मशास्त्र (बाइबिल- पुराना और नया नियम), बाइबिल सोसाइटी आफ इंडिया, बंगलौर, 1972, उत्पत्ति- 1 : 27.
21. खा खेलार जस है दुइ करा। उहै रूप आदम अवतरा।। दुहूं भांति तस सिरजा काया। भए दुइ हाथ भए दुइ पाया।। भए दुइ नयन स्रवन दुइ भांती। भए दुइ अधार दसन दुइ पांती।। माथ सरग धार धारती भएउ। मिलि तिन्ह जग दूसर होइ गएउ।। माटी मांसु रकत भा नीरू। नसैं नदी हिय समुद गंभीरू।। रीढ़ सुमेरु कीन्ह तेहि केरा। हाड़ पहार जुरै चहुं फेरा।। बार बिरिछ रोवां खर जामा। सूत सूत निसरे तन चामा।। (अखरावट, 8/चौपाई, 1-7)
22. पहिल खंड जो सनीचर नाऊं। लखि न अंटकु पौरी महं ठाऊं।। दूसर खंड बृहस्पति तहंवा। काम दुवार भोग घर जहंवा।। तीसर खंड जो मंगल जानहु। नाभि कंवल महं ओहि अस्थानहु।। चौथ खंड जो आदित अहई। बाईं दिसि अस्तन महं रहई।। पांचवं खंड सुक्र उपराहीं। कंठ माहं औ जीभ तराहीं।। छठएं खंड बुद्ध कर बासा। दुइ भौंहन्ह के बीच निवासा।। (वही, 17/चौपाई 2-7), सातवं सोम कपार महं कहा सो दसवं दुवार। जो वह पवंरि उघारै सो बड़ सिद्ध अपार।। (वही, 17/दोहा)
23. सातौं दीप नवौ खण्ड आठौ दिसा जो आहिं। जो बरह्मण्ड सो पिण्ड है हेरत अन्त न जाहिं।। (वही, 8/दोहा)
24. मिश्र, विद्यानिवास (संपा.), साहित्यिक ब्रजभाशा कोश- खण्ड तीन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, द्वितीय संस्करण, 2012, पृष्ठ 266.
25. नाभा, कान्ह सिंह, महान कोश, भाषा विभाग, पंजाब, सप्तम संस्करण, 2006, पृष्ठ 686.
26. नासिक पुल सरात पथ चला। तेहि कर भौंहें हैं दुइ पला।। चाँद सूरज दूनौ सुर चलहीं। सेत लिलार नखत झलमलहीं।। जागत दिन निसि सोवह माँझा। हरश भोर बिसमय होइ सांझा।। सुख बैकुंठ भुगुति औ भोगू। दुख है नरक जो उपजै रोगू।। बरखा रुदन गरज अति कोहू। बिजुरी हंसी हिवंचन छोहू।। घरी पहर बेहर हर सांसा। बीतै छओ ऋतु बारह मासा।। (अखरावट, 9/चौपाई, 2-7)
27. माथ ऊँच मक्का बन ठाऊं। हिया मदीना नबी क नाऊँ।। सरवन आंखि नाक मुख चारी। चारिहु सेवक लेहु बिचारी।। भावै चारि फिरिस्ते जानहु। भावै चारि यार पहिचानहु।। (वही, 10/चौपाई 2-4)
28. शुक्ल, रामचन्द्र (संपा.), जायसी ग्रन्थावली, अनुप्रकाशन, जयपुर, 2007, जायसी का जीवन वृत्त, पृष्ठ 6.
29. बुंदहि समुद समान यह अचरज कासौं कहौं ? जो हेरा सो हेरान मुहमद आपुहि आप महं।। (अखरावट, 7/सोरठा)
30. देखहु कौतुक आइ रूख समाना बीज महं। आपुहि खोदि जमाइ मुहमद सो फल चाखई।। (वही, 11/सोरठा), तन महं पीर औ बेदन पूरी। तन तहं बैद औ औशद मूरी।। तन महं बिश औ अमृत बसई। जानै सो जो कसौटी कसई।। (वही, 23/चौपाई 3-4)
31. पवनहुं तें मन चांड मन तें आसु उतावला। कतहूं मेंड़ न डांड़ मुहमद बहु बिस्तार सो।। (वही, 10/सोरठा)
32. सोवत अंत अंत महं डोलै। जब बोलै तब घट महं बोलै।। (वही, 11/चौपाई 7), जबहि नींद चख आवै उपजि उठै संसार। जागत ऐस न जानै दहु सो कौन भंडार।। (वही, 12/दोहा)
33. छा छाया जस बुंद अलोपू। ओठईं सौं आनि रहा करि गोपू।। सोइ चित्त सौं मनुवां जागै। ओहि मिलि कौतुक खेलै लागै।। देखि पिंड कहं बोली बोलै। अब मोहिं बिनु कस नैन न खोलै?।। परमहंस तेहि ऊपर देई। सोऽहं सोऽहं सांसै लेई।। तन सराय मन जानहु दीया। आसु तेल दम बाती कीया।। दीपक महं बिधि जोति समानी। आपुहि बरै बाति निरबानी।। निघटे तेल झूरि भइ बाती। गा दीपक बुझि अंधियारि राती।। (वही, 13/चौपाई 1-7)
34. गा सो प्रान परेवा कै पींजर तन छूंछ। मुए पिंड कस फूलै? चेला गुरु सन पूछ।। (वही, 13/दोहा), बिगरि गए सब नावं हाथ पांव मुंह सीस धार। तोर नावं केहि ठांव मुहमद सोइ बिचारिए।। (वही, 13/सोरठा)
35. बिरिछ एक लागी दुइ डारा। एकहि तें नाना परकारा।। मातु के रकत पिता के बिंदू। अपने दुवौ तुरुक औ हिन्दू।। रकतहु तें तन भए चौरंगा। बिंदुहु तें जिउ पांचौ संगा।। जस ए चारिउ धरति बिलाहीं। तस वै पांचौ सरगहिं जाहीं।। फूलै पवन पानि सब गरई। अगिनि जारि तन माटी करई।। (वही, 14/चौपाई 2-6)
36. सात खंड औ चारि निसेनी। अगम चढ़ाव पंथ तिरबेनी।। तौ वह चढ़ै जौ गुरू चढ़ावै। पांव न डगै अधिकबल पावै।। जो अपने बल चढ़ि कै नांघा। सो खसि परा टूटि गइ जांघा।। (वही, 24/चौपाई 2,3,5), आपुहि खोए पिउ मिलै पिउ खोए सब जाइ। देखहु बूझि बिचारि मन लेहु न हेरि हेराइ।। (वही, 23/दोहा), आपुहि गुरु आपुहि भा चेला। आपुहि सब औ आपु अकेला।। अहै सो जोगी अहै सो भोगी। अहै सो निरमल अहै सो रोगी।। (वही, 24/चौपाई 3-4), कथा न अहै अकथ भा रहई। बिना बिचारि समुझि का परई।। (वही, 24 /चौपाई 5).